International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन

Vakil Ahmad
Research Scholar, Department of Political Science, Malwanchal University, Indore
Dr. Prakash G Hambarde
Supervisor, Department of Political Science, Malwanchal University, Indore

सारांश
वैश्वीकरण आधुनिक विश्व व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। भारत में 1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने तीव्र गति प्राप्त की और इसका प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारतीय राजनीति, शासन व्यवस्था, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं पर भी व्यापक रूप से देखा गया। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में वैश्वीकरण की अवधारणा, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में आए परिवर्तनों, राजनीतिक दलों की नीतियों, चुनावी राजनीति, सामाजिक न्याय, आर्थिक नीतियों तथा सांस्कृतिक पहचान के प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया कि वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति को अधिक प्रतिस्पर्धात्मक, बाज़ारोन्मुख और तकनीक-आधारित बनाया है, वहीं दूसरी ओर इससे सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक संकट तथा राजनीतिक केंद्रीकरण जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। यह शोध पत्र वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: वैश्वीकरण, भारतीय राजनीति, उदारीकरण, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक सुधार, सांस्कृतिक प्रभाव, लोकतंत्र

1. प्रस्तावना

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में वैश्वीकरण विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था की सबसे प्रभावशाली प्रक्रियाओं में से एक बनकर उभरा। वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ है विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ती पारस्परिक निर्भरता। सूचना प्रौद्योगिकी, संचार माध्यमों, परिवहन व्यवस्था और मुक्त व्यापार नीतियों ने विश्व को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया 1991 के आर्थिक सुधारों के साथ अधिक स्पष्ट रूप से प्रारंभ हुई, जब नई आर्थिक नीति के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाया गया।

भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रहा है। इसने न केवल राजनीतिक नीतियों और शासन प्रणाली को प्रभावित किया, बल्कि लोकतंत्र की कार्यप्रणाली, राजनीतिक

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

दलों की रणनीतियों, चुनावी प्रक्रिया, नागरिक अधिकारों और सामाजिक आंदोलनों को भी नया स्वरूप प्रदान किया। वैश्वीकरण के कारण राज्य की भूमिका में परिवर्तन आया तथा बाजार शक्तियों का प्रभाव बढ़ा। आर्थिक नीतियों में उदार दृष्टिकोण अपनाने से विदेशी निवेश और निजी क्षेत्र को बढ़ावा मिला, जिसका प्रभाव राजनीतिक निर्णयों पर भी दिखाई दिया।

वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति को अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और वैश्विक शक्तियों से अधिक जोड़ दिया। विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं के प्रभाव के कारण भारत की आर्थिक और राजनीतिक नीतियों में परिवर्तन देखा गया। इसके अतिरिक्त वैश्विक मीडिया, इंटरनेट और सोशल मीडिया के विस्तार ने राजनीतिक जागरूकता और जनमत निर्माण की प्रक्रिया को भी बदल दिया है।

हालाँकि वैश्वीकरण ने विकास, तकनीकी प्रगति और आर्थिक अवसरों को बढ़ावा दिया, लेकिन इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आईं। सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, सांस्कृतिक क्षरण, क्षेत्रीय असंतुलन और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ भी वैश्वीकरण के प्रभावों से जुड़ी हुई हैं। इसलिए भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

यह शोध पत्र भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि वैश्वीकरण ने भारत की राजनीतिक संरचना और लोकतांत्रिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया है।

अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने की आवश्यकता तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में देश की राजनीतिक प्रणाली की उभरती गतिशीलता को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे भारत विश्व अर्थव्यवस्था में तेजी से एकीकृत होता जा रहा है, राजनीतिक निर्णय अब वैश्विक ताकतों से अलग नहीं रह गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों, विदेशी निवेशों, वैश्विक मीडिया और अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव सीधे राष्ट्रीय नीतियों और शासन को प्रभावित करता है। वैश्वीकरण ने नई राजनीतिक विचारधाराओं, दलों और क्षेत्रीय आंदोलनों को जन्म दिया है, जिससे यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण हो गया है कि ये बदलाव भारतीय लोकतंत्र को कैसे आकार देते हैं। यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वैश्वीकरण द्वारा भारत की राजनीतिक संस्थाओं, शासन संरचनाओं और सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के लिए प्रस्तुत चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालता है। यह नीति निर्माताओं, विद्वानों और नागरिकों को यह आकलन करने में सक्षम बनाता है कि क्या भारत की राजनीतिक प्रणाली अपने मूल मूल्यों को बनाए रखते हुए वैश्विक संदर्भ में प्रभावी रूप से अनुकूलन कर रही है। वैश्वीकरण के प्रति राजनीतिक प्रतिक्रियाओं की जांच करके, यह अध्ययन इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा कि भारत समावेशी विकास और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देते हुए वैश्वीकृत दुनिया की जटिलताओं को कैसे नेविगेट कर सकता है। इन परिवर्तनों को समझना असमानता, सांस्कृतिक बदलाव

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

और नीतिगत सुधारों जैसे ज्वलंत मुद्दों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण है, जिन्हें वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति के सामने ला दिया है।

अध्ययन का महत्व

भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने का महत्व पिछले कुछ दशकों में देश के राजनीतिक परिदृश्य को नया रूप देने वाले परिवर्तनकारी परिवर्तनों की व्यापक समझ प्रदान करने की इसकी क्षमता में निहित है। वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है, नीति-निर्माण और आर्थिक रणनीतियों से लेकर सामाजिक आंदोलनों और चुनावी गतिशीलता तक। यह अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह वैश्विक रुझानों और स्थानीय राजनीतिक विकास के बीच अंतर्संबंध को उजागर करता है, यह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि भारत के राजनीतिक संस्थानों और शासन संरचनाओं ने अंतर्राष्ट्रीय दबावों के अनुकूल कैसे ढला है। यह भारत के राजनीतिक विमर्श को नया रूप देने में वैश्वीकरण की भूमिका पर भी जोर देता है, जहां पर्यावरणीय स्थिरता, मानवाधिकार और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दे अब राष्ट्रीय बातचीत का अभिन्न अंग हैं। अध्ययन वैश्विक प्रभावों की प्रतिक्रिया के रूप में क्षेत्रवाद के उदय और राजनीतिक दलों के विविधीकरण को रेखांकित करता है, यह दर्शाता है कि कैसे घरेलू राजनीति व्यापक भू-राजनीतिक और आर्थिक कारकों द्वारा तेजी से आकार ले रही है। राजनीतिक विचारधाराओं और राजनीतिक नेताओं के बारे में जनता की धारणा पर वैश्वीकरण के प्रभावों को समझने से मतदाताओं की बदलती प्राथमिकताओं को पहचानने में मदद मिलेगी। वैश्वीकरण से मिलने वाले लाभों और चुनौतियों की जांच करके, यह शोध नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत की संप्रभुता, एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित करते हुए एक दूसरे से जुड़ी दुनिया की जटिलताओं को समझने के लिए एक रोडमैप प्रदान करता है। अंततः, इस अध्ययन के निष्कर्ष वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था में भारत के भविष्य के प्रक्षेपवक्र को आकार देते हुए अधिक सूचित राजनीतिक संवाद में योगदान देंगे।

2. वैश्वीकरण की अवधारणा और स्वरूप

वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों का विस्तार होता है। यह प्रक्रिया राष्ट्रों के बीच सीमाओं को कम करती है तथा पूँजी, वस्तुओं, सेवाओं, तकनीक और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है। वैश्वीकरण का आधुनिक स्वरूप मुख्यतः पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था और मुक्त बाजार नीति पर आधारित है।

वैश्वीकरण की अवधारणा को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। कुछ विद्वान इसे आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया मानते हैं, जबकि अन्य इसे सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों के संदर्भ में देखते हैं। एंथनी गिडेन्स के अनुसार वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत दूरस्थ क्षेत्रों की घटनाएँ स्थानीय जीवन को प्रभावित करती हैं। वहीं जोसेफ स्टिग्लिट्ज़ के अनुसार वैश्वीकरण देशों और लोगों के बीच बढ़ती निकटता की प्रक्रिया है।

वैश्वीकरण के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित हैं:

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

(क) आर्थिक वैश्वीकरण

इसका संबंध अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और मुक्त बाजार व्यवस्था से है। आर्थिक वैश्वीकरण के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकरण बढ़ता है। भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद विदेशी पूँजी निवेश और निजीकरण को बढ़ावा मिला।

(ख) राजनीतिक वैश्वीकरण

राजनीतिक वैश्वीकरण के अंतर्गत विभिन्न देशों की राजनीतिक नीतियों और निर्णयों पर अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं तथा वैश्विक शक्तियों का प्रभाव बढ़ता है। संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व व्यापार संगठन और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएँ वैश्विक राजनीति को प्रभावित करती हैं।

(ग) सामाजिक वैश्वीकरण

सामाजिक वैश्वीकरण के माध्यम से विभिन्न समाजों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ता है। शिक्षा, संचार, पर्यटन और प्रवासन ने सामाजिक संबंधों को अधिक व्यापक बनाया है।

(घ) सांस्कृतिक वैश्वीकरण

सांस्कृतिक वैश्वीकरण के अंतर्गत विभिन्न देशों की संस्कृति, जीवन शैली, खान-पान, भाषा और मनोरंजन के साधनों का प्रसार होता है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज और राजनीति पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विश्व को परस्पर निर्भर बनाया है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह अवसरों और चुनौतियों दोनों का स्रोत रहा है। एक ओर इससे आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति हुई, वहीं दूसरी ओर स्थानीय उद्योगों, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समानता पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा।

3. भारत में वैश्वीकरण का विकास

भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे प्रारंभ हुई, लेकिन 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद इसे व्यापक गति मिली। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था और समाजवादी नीतियों को अपनाया। उस समय सरकार का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भरता, सार्वजनिक क्षेत्र का विकास और आर्थिक समानता स्थापित करना था। इसलिए विदेशी निवेश और निजी क्षेत्र पर कई प्रकार के नियंत्रण लगाए गए थे।

1980 के दशक के अंत तक भारत गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा था। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी, बढ़ता राजकोषीय घाटा और आर्थिक विकास की धीमी गति ने सरकार को नई आर्थिक नीतियाँ अपनाने के लिए प्रेरित किया। 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव और वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में नई आर्थिक नीति लागू की गई। इस नीति के तीन प्रमुख आधार थे—उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उदारीकरण के अंतर्गत औद्योगिक लाइसेंसिंग को समाप्त किया गया तथा व्यापार और निवेश पर लगे प्रतिबंधों में कमी की गई। निजीकरण के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाई गई। वैश्वीकरण के अंतर्गत विदेशी निवेश, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा दिया गया।

इन सुधारों के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में तीव्र परिवर्तन आए। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग, शिक्षा और सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास हुआ। भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग बन गया। इसके साथ ही राजनीतिक व्यवस्था में भी परिवर्तन दिखाई दिए। राजनीतिक दलों ने आर्थिक सुधारों और विकास आधारित राजनीति को प्राथमिकता देना शुरू किया।

वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकारों का दौर भी महत्वपूर्ण बना। क्षेत्रीय दलों का प्रभाव बढ़ा और केंद्र सरकार को विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों के हितों को ध्यान में रखकर नीतियाँ बनानी पड़ीं। इसके अतिरिक्त मीडिया और सूचना तकनीक के विकास ने राजनीतिक संचार और चुनावी अभियान की प्रकृति को बदल दिया।

हालाँकि वैश्वीकरण से आर्थिक विकास में वृद्धि हुई, लेकिन इससे आय असमानता, ग्रामीण संकट और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ भी बढ़ीं। इसलिए भारत में वैश्वीकरण का विकास मिश्रित परिणामों वाला माना जाता है।

4. भारतीय राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति की संरचना, कार्यप्रणाली, नीतिगत दृष्टिकोण तथा शासन प्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने विश्व अर्थव्यवस्था के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया, जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन देखने को मिले। वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय राजनीति अधिक विकासोन्मुख, तकनीकी रूप से आधुनिक तथा वैश्विक आर्थिक नीतियों से प्रभावित हुई है। इसके सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों, संघीय ढाँचे और सामाजिक संतुलन को प्रभावित किया है।

4.1 राजनीतिक नीतियों में परिवर्तन

वैश्वीकरण के कारण भारतीय राजनीतिक नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। पहले भारतीय राजनीति में समाजवादी और राज्य नियंत्रित आर्थिक व्यवस्था को महत्व दिया जाता था, परंतु वैश्वीकरण के बाद बाजारोन्मुख नीतियों को प्राथमिकता मिलने लगी। सरकार ने उदारीकरण, निजीकरण और विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया। आर्थिक विकास, औद्योगिक विस्तार, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे मुद्दे राजनीतिक एजेंडे का हिस्सा बन गए। राजनीतिक दलों ने भी अपनी चुनावी घोषणाओं में रोजगार सृजन, स्टार्टअप संस्कृति, तकनीकी विकास और निवेश आकर्षित करने जैसे विषयों को प्रमुखता दी। इससे राजनीति में विकास आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला, किंतु दूसरी ओर सामाजिक कल्याण की पारंपरिक अवधारणा कुछ हद तक कमजोर होती दिखाई दी।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

4.2 लोकतंत्र और शासन व्यवस्था पर प्रभाव

वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक सहभागी और पारदर्शी बनाया है। ई-गवर्नेंस, डिजिटल इंडिया, ऑनलाइन प्रशासन तथा सूचना का अधिकार जैसी व्यवस्थाओं ने शासन प्रणाली को अधिक जवाबदेह बनाया। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने नागरिकों को राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया है। अब आम नागरिक अपनी राय सीधे व्यक्त कर सकते हैं और सरकारी नीतियों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

हालाँकि इसके नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से फर्जी समाचार, दुष्प्रचार, राजनीतिक ध्रुवीकरण और जनमत को प्रभावित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। चुनावों में मीडिया प्रबंधन, डिजिटल प्रचार और धनबल का प्रभाव पहले की तुलना में अधिक हो गया है, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया पर प्रश्न उठने लगे हैं।

4.3 क्षेत्रीय राजनीति और संघवाद पर प्रभाव

वैश्वीकरण के कारण आर्थिक असमानताओं और क्षेत्रीय विकास में अंतर बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का प्रभाव भी बढ़ा। विभिन्न राज्यों ने अपने आर्थिक हितों, सांस्कृतिक पहचान और संसाधनों की सुरक्षा के लिए क्षेत्रीय राजनीति को मजबूत किया। तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना जैसे राज्यों में क्षेत्रीय दलों ने महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका निभाई।

इसके साथ ही वैश्वीकरण के दौर में केंद्र सरकार की भूमिका आर्थिक और नीतिगत मामलों में अधिक प्रभावशाली हुई। अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते, विदेशी निवेश नीतियाँ और वैश्विक आर्थिक संस्थाओं के दबाव के कारण कई बार राज्यों की स्वायत्तता सीमित होती दिखाई दी। इससे संघीय ढाँचे और केंद्र-राज्य संबंधों पर प्रभाव पड़ा तथा राजनीतिक केंद्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी।

4.4 चुनावी राजनीति में परिवर्तन

वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने चुनावी राजनीति की प्रकृति को पूरी तरह बदल दिया है। चुनाव प्रचार में सोशल मीडिया, डेटा विश्लेषण, डिजिटल प्लेटफॉर्म और आधुनिक संचार तकनीकों का व्यापक उपयोग होने लगा है। राजनीतिक दल अब मतदाताओं तक पहुँचने के लिए ऑनलाइन अभियानों, मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल विज्ञापनों का सहारा लेते हैं। इससे चुनाव प्रचार अधिक प्रभावशाली और तेज़ हुआ है।

इसके अतिरिक्त कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी और चुनावी फंडिंग का महत्व भी बढ़ा है। राजनीतिक दलों को बड़े आर्थिक समूहों से समर्थन मिलने लगा, जिससे राजनीति में पूँजी का प्रभाव अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। इससे राजनीतिक निर्णयों पर आर्थिक शक्तियों के प्रभाव को लेकर चिंताएँ भी बढ़ी हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति को आधुनिक और गतिशील बनाया है, लेकिन साथ ही नई सामाजिक, आर्थिक और लोकतांत्रिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

5. साहित्य समीक्षा

वैश्वीकरण और भारतीय राजनीति के संबंध में अनेक विद्वानों ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आयामों का अध्ययन किया है। एस. भट्टाचार्य, बी.के. सचदेव तथा ए. सेठ (2021) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था और राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की है। उनके अनुसार उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों ने विकास की गति को बढ़ाया, परंतु इसके साथ सामाजिक असमानता और क्षेत्रीय विषमता भी बढ़ी। इसी प्रकार ए.पी. सिंह (2008) ने राष्ट्रीय राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए बताया कि वैश्विक आर्थिक शक्तियों के कारण भारतीय राजनीतिक दलों की नीतियों में परिवर्तन आया तथा विकास आधारित राजनीति को अधिक महत्व मिलने लगा। बी. बरार, ए. कुमार और आर. राम (2008) ने पहचान की राजनीति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करते हुए बताया कि आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण जातीय, भाषाई तथा क्षेत्रीय पहचान की राजनीति को नया बल मिला। एम. चटर्जी (2013) ने राजनीति के वैश्वीकरण को सामाजिक आंदोलनों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से जोड़ते हुए यह तर्क दिया कि वैश्विक संचार व्यवस्था ने राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय समाज, प्रशासन और संस्कृति पर वैश्वीकरण के प्रभाव को लेकर भी कई महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं। वाई.जी. नायडू (2006) ने भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए बताया कि इससे सामाजिक संरचना, जीवन शैली तथा उपभोक्तावाद में व्यापक परिवर्तन हुए। एम. दास (2016) तथा ए. शर्मा एवं पी. चौधरी (2014) ने वैश्वीकरण को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक बताते हुए विदेशी निवेश, तकनीकी विकास और रोजगार के अवसरों में वृद्धि को इसका प्रमुख परिणाम माना। दूसरी ओर ए.के. दत्त और जे.एम. राव (2000) ने वैश्वीकरण से उत्पन्न सामाजिक असंतोष, बेरोजगारी और आर्थिक विषमता पर चिंता व्यक्त की। डी. मीनू (2013) ने प्रशासनिक व्यवस्था पर वैश्वीकरण और उदारीकरण के प्रभाव का अध्ययन करते हुए बताया कि ई-गवर्नेंस, पारदर्शिता और प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार आर.के. उपाध्याय (2014) तथा आर.आर. गोगिनेनी आदि (2018) ने भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए कहा कि पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक भारतीय मूल्यों में परिवर्तन आया है।

भारतीय राजनीति, पहचान और राष्ट्रवाद के संदर्भ में भी वैश्वीकरण को महत्वपूर्ण कारक माना गया है। ए. कोहली और पी. सिंह (2013) ने भारतीय राजनीति की संरचना और नीति निर्माण की प्रक्रिया में वैश्विक प्रभावों को महत्वपूर्ण बताया। एस. मित्रा (2017) ने भारतीय राजनीति की संरचना, प्रक्रिया और नीति का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया कि वैश्वीकरण ने लोकतांत्रिक संस्थाओं और राजनीतिक व्यवहार दोनों को प्रभावित किया है। सी. किन्नवैल (2007) ने धार्मिक राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के संबंधों का अध्ययन करते हुए कहा कि वैश्विक परिवर्तनों के कारण सांस्कृतिक असुरक्षा की भावना बढ़ी, जिससे धार्मिक राष्ट्रवाद को बल मिला। इसी प्रकार एस. राज (2021) ने हिंदू राष्ट्रवाद और प्रवासी भारतीयों की भूमिका का विश्लेषण

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

किया तथा बताया कि वैश्विक भारतीय समुदाय ने भारतीय राजनीति और राष्ट्रवादी विमर्श को प्रभावित किया है। वी. पिंगले और ए. वार्ष्णेय (2006) ने पहचान की राजनीति और वैश्वीकरण के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्थिक उदारीकरण के साथ जातीय और सांस्कृतिक राजनीति का प्रभाव भी बढ़ा। इन सभी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति, समाज, संस्कृति और प्रशासन को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है तथा इसके प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में दिखाई देते हैं।

6. भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने सामाजिक संरचना, जीवन शैली, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है।

6.1 सामाजिक परिवर्तन

वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में आधुनिकता और व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति बढ़ी है। पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन दिखाई दिया है। संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर हुई है तथा एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के विस्तार ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार किया है।

6.2 मध्यम वर्ग का विस्तार

आर्थिक विकास और सेवा क्षेत्र के विस्तार के कारण भारत में मध्यम वर्ग का तेजी से विकास हुआ। उपभोक्तावाद और आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव बढ़ा। मध्यम वर्ग राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक और सक्रिय हुआ है।

6.3 सामाजिक असमानता

वैश्वीकरण के कारण आर्थिक अवसर बढ़े, लेकिन इनका लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच सका। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता बढ़ी। अमीर और गरीब के बीच आय का अंतर अधिक हुआ। ग्रामीण किसान और छोटे उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण प्रभावित हुए।

6.4 शिक्षा और जागरूकता

सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के प्रसार से शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई। युवा वर्ग वैश्विक मुद्दों और लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति अधिक सजग हुआ है। सामाजिक आंदोलनों और नागरिक अभियानों में युवाओं की भागीदारी बढ़ी है।

6.5 सामाजिक आंदोलनों का विकास

वैश्वीकरण के दौर में पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय से जुड़े आंदोलनों को नया स्वरूप मिला। सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इन आंदोलनों को वैश्विक समर्थन प्रदान किया।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

7. भारतीय अर्थव्यवस्था और राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था और राजनीति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। आर्थिक नीतियों और राजनीतिक निर्णयों के बीच संबंध अधिक गहरे हुए हैं।

7.1 आर्थिक विकास और राजनीतिक स्थिरता

1991 के बाद भारत की आर्थिक विकास दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। विदेशी निवेश, औद्योगिक विकास और सेवा क्षेत्र के विस्तार ने आर्थिक प्रगति को गति दी। आर्थिक विकास को राजनीतिक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा।

राजनीतिक दलों ने विकास आधारित राजनीति को अपनाया। सड़क, बिजली, डिजिटल सेवाएँ और बुनियादी ढाँचे के विकास को चुनावी मुद्दा बनाया गया।

7.2 निजीकरण और राज्य की भूमिका

वैश्वीकरण के कारण सरकार ने कई क्षेत्रों में निजीकरण को बढ़ावा दिया। इससे राज्य की भूमिका नियामक और प्रोत्साहक के रूप में बदल गई। शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन जैसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ी।

हालाँकि निजीकरण के कारण सामाजिक न्याय और समान अवसर के प्रश्न भी उठे। गरीब वर्गों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता चुनौतीपूर्ण बनी रही।

7.3 कृषि क्षेत्र पर प्रभाव

वैश्वीकरण का कृषि क्षेत्र पर मिश्रित प्रभाव पड़ा। निर्यात के अवसर बढ़े, लेकिन विदेशी प्रतिस्पर्धा और उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण किसानों की समस्याएँ भी बढ़ीं। कृषि संकट और किसानों की आत्महत्या जैसे मुद्दे राजनीतिक बहस का विषय बने।

7.4 रोजगार और श्रम बाजार

वैश्वीकरण के कारण सूचना प्रौद्योगिकी, बीपीओ और सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े। लेकिन असंगठित क्षेत्र और पारंपरिक उद्योगों में रोजगार असुरक्षा भी बढ़ी। अनुबंध आधारित रोजगार और श्रम अधिकारों से जुड़े मुद्दे राजनीतिक चर्चा का केंद्र बने।

7.5 कॉर्पोरेट राजनीति

वैश्वीकरण के साथ कॉर्पोरेट क्षेत्र का राजनीतिक प्रभाव बढ़ा है। चुनावी चंदा, लॉबिंग और नीति निर्माण में बड़े उद्योगपतियों की भूमिका महत्वपूर्ण हुई है। इससे राजनीति में पारदर्शिता और जवाबदेही को लेकर चिंताएँ बढ़ी हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

8. निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने भारतीय राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बना और इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक नीतियों तथा शासन व्यवस्था में अनेक परिवर्तन आए। राजनीतिक दलों ने विकास और आर्थिक सुधारों को प्राथमिकता दी तथा तकनीकी और डिजिटल माध्यमों का उपयोग बढ़ा।

वैश्वीकरण ने लोकतंत्र को अधिक सहभागी और जागरूक बनाया, लेकिन इसके साथ ही राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक संकट जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुईं। सामाजिक स्तर पर मध्यम वर्ग का विस्तार हुआ और शिक्षा तथा तकनीक के क्षेत्र में प्रगति हुई, किंतु ग्रामीण और गरीब वर्ग अपेक्षाकृत पीछे रह गए।

भारतीय राजनीति के संदर्भ में वैश्वीकरण का प्रभाव मिश्रित रहा है। इसने विकास और आधुनिकता को बढ़ावा दिया, परंतु सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण की चुनौतियों को भी बढ़ाया। इसलिए आवश्यक है कि भारत ऐसी नीतियाँ अपनाए जो आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक समानता, सांस्कृतिक विविधता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा कर सकें।

अंततः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसका प्रभाव समय के साथ बदलता रहेगा। भारतीय राजनीति के लिए यह आवश्यक है कि वह वैश्विक अवसरों का लाभ उठाते हुए राष्ट्रीय हितों और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को संतुलित रूप से बनाए रखे।

संदर्भ सूची

1. भट्टाचार्य, एस., सचदेव, बी.के., और सेठ, ए. (2021)। भारतीय अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव, इसका परिवर्तन और भविष्य के पहलू। मल्टीडिसिप्लिनरी टॉपिक्स में हाल के अग्रिमों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल , 2 (11), 133-138।
2. सिंह, ए.पी. (2008)। वैश्वीकरण और भारत के संदर्भ में राष्ट्रीय राजनीति पर इसका प्रभाव: विभिन्न आयामों का अवलोकन। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस , 801-814।
3. बरार, बी., कुमार, ए., और राम, आर. (संपादक)। (2008)। वैश्वीकरण और भारत में पहचान की राजनीति । पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
4. चटर्जी, एम. (2013). राजनीति का वैश्वीकरण: मिस्र से भारत तक. सामाजिक आंदोलन अध्ययन , 12 (1), 96-102.
5. नायडू, वाई.जी. (2006)। वैश्वीकरण और भारतीय समाज पर इसका प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस , 65-76।
6. दास, एम. (2016). वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका सकारात्मक प्रभाव। SSRN 2738054 पर उपलब्ध है ।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

7. गोगिनेनी, आरआर, कल्लिवयालिल , आरए, शर्मा, एस., रतामेने , एस., और अख्तर, एस. (2018)। संस्कृति का वैश्वीकरण: भारतीय मानस पर प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइकियाट्री , 34 (4), 303-312।
8. योगानंदम , जी., और करीम, एमएए (2021)। भारतीय समाज, सतत विकास और अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के परिणाम-एक मूल्यांकन। जूनी ख्यात , 13 , 88-95।
9. गुप्ता, एच., और जायसवाल, एन. (2011). वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव. पायनियर जर्नल , 01-10.
10. मीनू, डी. (2013)। भारतीय प्रशासन पर वैश्वीकरण और उदारीकरण का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग, फाइनेंशियल सर्विसेज एंड मैनेजमेंट रिसर्च , 2 (9), 120-125।
11. शर्मा, ए., और चौधरी, पी. (2014)। भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव। जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड गवर्नेंस , 3 (1), 36-40।
12. कोहली, ए., और सिंह, पी. (2013)। परिचय: भारत में राजनीति - एक सिंहावलोकन। रूटलेज हैंडबुक ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स , 1-17।
13. मार्जीत , एस., और यू, ईएसएच (2018)। भारत में वैश्वीकरण और पर्यावरण (सं. 873)। एडीबीआई वर्किंग पेपर।
14. दत्त, ए.के., और राव, जे.एम. (2000). वैश्वीकरण और इसके सामाजिक असंतोष: भारत का मामला. सेंटर फॉर इकोनॉमिक पॉलिसी एनालिसिस वर्किंग पेपर , (16).
15. किन्नवैल , सी. (2007). भारत में वैश्वीकरण और धार्मिक राष्ट्रवाद: ऑन्टोलॉजिकल सुरक्षा की खोज . रूटलेज.
16. उपाध्याय, आर.के. (2014)। भारत में वैश्वीकरण का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव। द डिस्कसेंट , 2 (3)।
17. मित्रा, एस. (2017). भारत में राजनीति: संरचना, प्रक्रिया और नीति . रूटलेज.
18. राज, एस. (2021). हिंदू राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय राजनीति पर इसका प्रभाव: वैश्विक भारतीय प्रवासियों की भूमिका की जांच। भारतीय समाज में महान परिवर्तन: धर्म, अर्थव्यवस्था और विदेश नीति (पृष्ठ 201-235) में।
19. पिंगले, वी., और वार्ष्णेय, ए. (2006). भारत की पहचान की राजनीति: तब और अब. वैश्वीकरण का प्रबंधन : चीन और भारत से सबक, सिंगापुर: वर्ल्ड साइंटिफिक बुक कॉर्पोरेशन , 353-386.
20. सिंह, एम.पी., और राज, एस.आर. (सं.) (2012)। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था । पियर्सन एजुकेशन इंडिया।